Sociology Hons.
B.A. Part 2
Paper 3

Social Psychology

Ques:— (2) What do you mean by the Motivation? And discuss its Role in development of human personality.

Ans:— Concept:— T. Parsons ने अपने अध्ययन के आधार पर कहा है कि किसी प्रकार के सामाजिक क्रिया के लिए तीन आधारों का होना आवश्यक होता है जैसे:— कर्ता, परिस्थिति तथा प्रेरणा। अर्थात कोई क्रिया करने वाला व्यक्ति का होना आवश्यक है, परन्तु इस क्रिया को किसी क्रिया का रूप, स्वरूप या प्रकृति उसकी परिस्थिति पर निर्भर करती है तथा उस परिस्थिति में व्यक्ति तब तक कोई कार्य या क्रिया नहीं करता जब तक कि उसके अन्दर मन:शारीरिक रूप से कोई 'चालक शक्ति' कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं करता है अथवा प्रेरणा न हो। अत: व्यक्ति में प्रयासों को जागृत करने तथा एक निश्चित लक्ष्य की ओर उन प्रयासों को संचालित करने वाली मन:शारीरिक चालक शक्ति को ही प्रेरणा कहते हैं। इस प्रकार स्पष्टत: हम कह सकते हैं कि प्रेरणा व्यक्ति की वह आन्तरिक स्थिति या 'चालक शक्ति है' जो व्यक्ति को निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति न होने तक क्रिया के लिए प्रेरित करती रहती है।

Meaning and defination:—

प्रेरणा का शाब्दिक अर्थ बड़ा ही व्यापक है इसका व्यापक रूप से शाब्दिक अर्थ 'उत्तेजना देना या दबाव डालना' को कहा जाता है क्योंकि जो भी परिस्थिति व्यक्ति को क्रिया करने के लिए उत्तेजना या दबाव डालती है तो उसे हम प्रेरणा कहते हैं संक्षिप्त रूप

Scanned with CamScanner

में कोई भी उत्तेजक (Stimulus) को प्रेरणा कहा जा सकता है मगर यह उत्तेजक बाहरी चीज तथा आन्तरिक दोनों हो सकता है अर्थात कोई भी बाहरी या आन्तरिक उत्तेजक जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए दबाव डालता है, प्रेरणा कहलाती है मगर मनोवैज्ञानिक अर्थ में यह इतना व्यापक तथा विस्तृत नहीं है क्योंकि मनोवैज्ञानिक अर्थ में प्रेरणा से हमारा तात्पर्य उन आन्तरिक उत्तेजकों से होता है, जिनके प्रतिक्रियास्वरूप व्यक्ति कोई व्यवहार करता है जैसे :- प्यास (Thirst) एक ऐसी आन्तरिक उत्तेजना है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति पानी पीने के लिए प्रेरित होता है।

अत: इसकी उत्पत्ति उस समय होती है जब भौतिक-रासायनिक परिवर्तन के फलस्वरूप मनुष्य की भी मानसिक स्थिति में परिवर्तन होता है तथा वे अपने अन्दर तनाव एवं बेचैनी का अनुभव करने लगता है इसलिए उपयुक्त विद्वानों ने लिखा है कि " प्रेरक (motive) क्रिया करवाने की एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसका आरम्भ या सूत्रपात प्रणोदन (drive) द्वारा होता है और जो अनुकूलन (Adjustment) द्वारा समाप्त हो जाती है।"

Defenation :- प्रेरणा को पूर्ण रूप से स्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानों ने अपनी-अपनी अलग-अलग परिभाषाएँ दी है जो निम्न है -

1. Sri Kimball young :- " व्यक्ति प्रेरित (motivated) है, यह बात हम उस अवस्था में कहते हैं, जब एक व्यक्ति कार्य की ओर गतिशील होता है या इस प्रकार की कुछ प्रतिक्रियाओं की ओर ढकेला, खींचा या उकसाया जाता है या

तनाव या कठिनाई को दूर कर देती है और सन्तुलन को पुनः स्थापित करती है।"

इसके परिभाषा से स्पष्ट होता है कि - Young ने प्रेरणा को प्रणोदन (drive) से पृथक माना है। इसके अन्तर्गत प्रणोदन का तात्पर्य उन आवेगों या प्रवृत्तियों से है जो कि अधिकतर प्रत्यक्ष रूप से उन प्राणीशास्त्रीयों की आवश्यकताओं पर आधारित होता है जो उसके जीवन के संतुलन को बनाये रखने से सम्बन्धित होते जैसे: भोजन, पानी, हवा आदि। मगर इसके ठीक विपरीत, प्रेरक का प्रयोग उन खींचातानियों (pushes and pulls) के लिए किया जाता है, जो सामाजिक तौर पर सीखी गई हो।

यह अर्थात इसमें Young ने कहा कि "प्रेरणाएं अर्जित प्रणोदन है जो मनुष्य में समाज के सदस्य होने तथा हाति ~~[illegible]~~ में भागीदार बनने के कारण उत्पन्न होती है" अतः Young ने केवल अर्जित प्रेरणाओं को ही स्वीकार नहीं करता क्योंकि अनेक प्रेरणाएं सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होती है मगर मनोवैज्ञानिक आधार पर सामान्य रूप से दो प्रकार की प्रेरणाएं को महत्व दिया जाता है प्रथम जैविक या जन्मजात (Biogenic or Innate) तथा सामाजिक या अर्जित (Socio-genic or acquired)

Sherif and Sherif : → "हम प्रेरणा को एक ऐसे व्यापक शब्द के रूप में प्रयोग करेंगे, जिसके अन्तर्गत उन समस्त आन्तरिक कारकों का समावेश हो, जो विभिन्न प्रकार के - उद्देश्य-संचालित (goal directed or motivated) व्यवहार को जन्म देते है, और जिनसे उन आन्तरिक प्रभावों का बोध हो जो, आवश्यकताओं द्वारा जाग्रत होते है, एवं सावयव (organism) की क्रियाशीलता, उन पर आधारित इच्छाओं

Scanned with CamScanner

और सामाजिक तौर पर अर्जित इच्छाओं तथा रुचियों में भी जड़ पकड़े रहते हैं।"

इस प्रकार यदि हम इनकी परिभाषा का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि इन्होंने प्राणीशास्त्रीय (जन्मजात) और सामाजिक (अर्जित) दोनों प्रकार की प्रेरणाओं को सम्मिलित किया है तथा इन्होंने प्रेरणा को आन्तरिक कारक या आन्तरिक प्रभाव कहा है जिसकी उत्पत्ति आवश्यकताओं के कारण होती है और जो क्रिया सावयव (Organism) या शरीर की क्रियाशीलता से ही नहीं अपितु प्राणीशास्त्रीय इच्छाओं एवं सामाजिक तौर पर अर्जित इच्छाओं, आकांक्षाओं और रुचियों से भी सम्बन्धित होती है।

इस प्रकार अनेक विद्वानों ने प्रेरणा की परिभाषाएं दी हैं जिससे व्यक्ति की आन्तरिक क्रियाओं एवं व्यवहारों का अध्ययन प्रेरित क्रियाओं के माध्यम से किया है मगर फिर भी सम्पूर्ण परिभाषाएं एकांगी एवं अपूर्ण प्रतीत होती हैं अतः वास्तविक रूप से प्रेरणा की परिभाषा हम इस प्रकार से दे सकते हैं।

"प्रेरणा व्यक्ति की वह जैविक और आन्तरिक मनः शारीरिक प्रक्रिया है या चालक शक्ति है जो कि व्यक्ति को किन्हीं प्राणीशास्त्रीय व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति न होने तक क्रिया के लिए प्रेरित करती है।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि कोई भी प्रेरणा के प्रति व्यक्ति तब प्रेरित होता है जब तक व्यक्ति को किसी भी प्रकार की आवश्यकता न हो, अतः आवश्यकता (Need) व्यक्ति की इच्छा (Desire) को जन्म देती है तथा उद्दीपन (Incentive) के द्वारा वह अपनी प्रेरणा शक्ति को पूरा करता है।

Scanned with CamScanner